ISSN 2455-5169

लघु-कथा

डॉ नीना छिब्बर की लघु-कथाएं

डॉ नीना छिब्बर

आडी जाऊँगी

अमर रमेश पटेल, उम्र पचपन, कपड़ा व्यापारी, मूल निवासी पाली, हाल निवासी मुम्बई अपने दो बच्चों एवं पत्नी के साथ तीन बेडरूम वाले फ्लैट में तकरीबन बीस-बाईस सालों से रह रहा है।अमर के पिता रमेश ग्रामीण परिवेश मे पले बडे, युवावस्था मे मुम्बई आकर कपड़े का व्यापार आरंभ किया। मेहनत, लगन, ईमानदारी से अच्छा नाम कमाया।अपनी बेटी राखी का उच्च शिक्षा के बाद विवाह किया। पुत्र अमर के लिए पाली शहर की सुघड, सुशिक्षित, सुंदर कंचन को जीवन का हमसफर बना दिया। कंचन नये दौर के तौर तरीक़े को अपनाने मे हिचकती नहीं थी, पर अति आधुनिकता एवं दिखावटीपन से नफरत करती थी। दोनों की गृहस्थी चल पडी। इसी बीच घर मे दो नये मेहमान आए और दो वरद हस्त देवलोक गमन हुए।

अमर अब कंचन को मुम्बई के नवीनतम तौर-तरीके अपनाने के लिए बाध्य करने लगा। वह मित्रों की अतिआधुनिक पत्नियों को देखकर, स्वयं के दाम्पत्य जीवन को हीन मानने लगा। यदि वह कंचन को जबरदस्ती क्लब, पब, या पार्टी मे ले जाता तो वह.असहज महसूस करती, अमर के मित्र उसे उकसाते कि व्यापार का बादशाह पर संगिनी मेल की नही। कंचन और अमर की गृहस्थी डगमगाने लगी। अब अमर उसे विभिन्न प्रकार से प्रताड़ित करता, गावडी ग्वार, बेमेल कहकर मनोबल गिराता, पर वो तो मुसकुराते हुए बच्चों का जीवन संवारती रही।

एकदिन अमर ने अपना फैसला सुना दिया कि मै तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। जितना धन चाहिए लो और जाओ। पर कंचन एक ही बात कहती- "सीधी आई हूँ आडी जाऊँगी।" इसी बात को दोहराती। शनै-शनै अमर बाहर की दुनिया और कंचन भीतर की दुनिया मे अगरबत्ती की तरह सुलगती रही।

एक अलसुबह हृदयाघात से कंचन ने चिर निद्रा पाई। पूरा परिवार, समाज, मित्रगण, बच्चे शोकमगन थे। दोपहर को कंचन की बूढी माँ ने गाँव से आकर दहाड़े मारते हुए कहा- "हाय रे मेरी बेटी, कर दिखाया तूने सीधी आई थी और आडी जा रही है।"

अमर को यह सुनकर काठ मार गया। कंचन का "आडी जाऊँगी" का मतलब अब समझ आया, पर बहुत देर से।

भूख

घंटाघर के मैदान में आज विपक्षी नेता श्रीमान अमीरचंद का भाषण था। बंद दुकानों. एवं इमारतों पर पार्टी के झंडे लगे थे। विशाल मंच की पृष्ठभूमि पर भावी नेताओं की तस्वीरे लगी थीं। प्रमुख देशभक्तो के भी चित्र थे। परंतु सब से बडे कट ऑऊट तो फल, अनाज, सब्जियों के थे। लाऊडस्पीकर पर देशभक्ति गूंजायमान थी। नेताओं के पिछलग्गू झक सफेद वस्त्रो मे, पार्टी के बिल्ले लगाए जनता के बीच घूम रहे थे।

जैसे ही मंत्री जी पधारे, उनकी जयजयकार से माहौल रंग गया। छुटभैया नेताओं ने अमीरचंद जी को मालाओं से लाद दिया। तालियों की गडगडाहट के बीच नेता जी ने अपना भाषण आरंभ किया। अपनी आर्कषण एवं ओजस्वी वाणी से विश्व मे बढती महंगाई के आंकडे प्रस्तुत किए, उस मे भारत की स्थिति बताई। बार-बार वह एक ही बात की ओर इंगित कर रहे थे कि यह महंगाई की मार वर्तमान सरकार की देन है। उन्होंने कहा, मै खुद एक गरीब घर का बेटा हूँ। आंतों की ऐठन

को महसूस कर सकता हूँ, भूख मैने देखी है। फिर एक नाटकीय अंदाज मे हाथ ऊपर उठाकर बोले, हे,ईश्वर यह भूख क्यों बनाई। गरीब बेचारा कैसे पेट भरेगा, वह मर जाएगा। फिर लोगों की ओर दृष्टि डाली, अपनी सूखी आंखों को पौंछा। जनता ने जोरदार ताली बजाई। हमारी सरकार आप सबको भूख के नरक मे जलने नही देगी। माहौल जम रहा था। वोट पक रहे थे।

उसी पंडाल के आखिरी छोर पर एक भिखारिन सात माह का गर्भ लिए बैठी थी। लोग वितृष्णा से देखते हुए, दूर दूर चल रहे थे। भिखारिन भी नेता की तरह अट्टहास कर रही थी। हाथ ऊपर उठा कर बोली है मूर्ख पेट की आग बडी नही होती उससे बडी शरीर की भूख है। हे भगवान उसको क्यों बनाया। पेट की भूख शांत करने के लिए तो मनचले और व्यभिचारी भी साफ थाली ढूंढता है, पर तन की भूख के समय क्यों अंधे हो जाते हैं; निर्ममता से(भिखारिन, पागल, विकलांग)से भी प्यास बुझाने मे संकोच नहीं करते। हे ईश्वर शरीर की भूख क्यों बनाई।

भूत - काल

समय के घर मे वर्तमान, भूत एवं भविष्य काल बैठकर अपनी अपनी महता पर बातें कर रहे थे। सब से पहले वर्तमान बोला," सुन लो दोनों, मनुष्यों की दुनिया मे मेरा ही महत्व है।जो मानव मुझे सर्वोपरि मान कर चलता है वह सदा खुश रहता है। बस आज मे जिओ, मस्त रहो, कुछ मिले तो ठीक नही तो येन केन प्रकरेण पाओ। ना बीते कल की सोचो ना आने वाले कल की सोच। जो है आज ही है, वर्तमान है।

उसकी बात सुन कर भविष्य ने टेढा मुँह बनाया और बोला ,वाह रे मूर्ख, किस गल्तफहमी मे जी रहा है। अरे, सब मेरी यानि भविष्य की चिंता करते हैं। आगे क्या होगा, इसी चिंता मे तेरे(वर्तमान) सुख को भी भोग नही पाते हैं। मेरे लिए तो सभी आयु वर्ग के लोग भागते रहते हैं। कुछ कम अक्ल भविष्य के लिए वर्तमान को भी नष्ट कर देते हैं।

दोनों की बाते सुनकर भूतकाल ने ठहाका लगाया। उसके इस व्यवहार से क्षुब्ध वर्तमान और भविष्य ने डाँटा। हँसने की ऐसी कौनसी बात कर दी हमने। तब भूतकाल बोला मैं हँसा आप दोनों की मूर्खता, नासमझी और अज्ञान पर। तुम दोनों किस लोक मे रहते हो। मानव चाहे भविष्य मे रहे या वर्तमान मे उस का अंतर्मन तो भूतकाल से चिपक कर प्रसन्न रहता है। दोनो ने एकसाथ कहा, झूठ, कोरी कल्पना सिद्ध कर सकते हो क्या?

क्यों नही अभी लो। मानव तो बालपन से लेकर वृद्धावस्था तक भूतकाल को गीले कंबल की तरह ओढ कर खुश रहता है। युवावस्था मे बचपन के सुख दुख, प्रौढावस्था मे युवावस्था के पाने खोने का हिसाब, सबसे अधिक वृद्धावस्था मे, तब तो उठते बैठते, सोते जागते, खाते पीते, हँसते रोते, भूतकाल की गोद मे ही जीता है। समझ लो मानव अनेकानेक घटनाए, रिश्ते, भावानुभूतियो को याद करके वर्तमान के सुख और भविष्य के आनंद को खुद के हाथों नष्ट करता है।

उसकी बातों को सुनकर वर्तमान और भविष्य दोनों सोच मे पड गए। सच है और प्राणियों का तो पता नही पर विशेष कर मनुष्य तो भूतकाल के हिंडोले मे झूलना पसंद करता है।

वर्तमान को सुधारने के लिए भी भूतकाल(पैतृक अवलंबन)की आवश्यकता और भविष्य के लिये भी बीता हुआ(ज्ञान, मान ,धन)। अब भूतकाल बोला ,देखो मेरा नाम तो भूत है पर मैं मरकर प्रेत वाला भूत नही। ना ही मेरे पैर उल्टे हैं नाही मै जमीन से दो कदम ऊपर चलता हूँ पर मै प्रत्येक मनुष्य के भीतर तक हूँ समझे।

संपर्क :

17\653 चोपासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर – 342008
neena.chhibbar@gmail.com